उम्मीद

चिड़ियों से सीखा था घोसला बनाना,
पर जब तिनकों को खोज लाना हुआ,
उन्हें गूँथ घर बनाना हुआ,
तो भूल गया संग हौंसलों को लाना।
सुना था सपने पूरे होते हैं,
सपनों के घर के आशियाने होते हैं,
पर घर हैं यह भी टूट जाते हैं,
इसीलिये तो कभी कभी सपने अधूरे रह जाते हैं।।

जीवन में नदियों सा बहना था,
बहकर दूर तक जाना था,
पर पथ में पर्वत देख समझ आया,
संग में सब का हाँथ भी थामना था।
मुश्किलों के पर्वत हट जाते हैं,
उसके आगे के रास्ते भी बन जाते हैं,
पर हाँथों में हालों को देख जो रुक गये,
तो पर्वत भी घमण्ड दिखाने से कहाँ चूकते हैं।।

दीपक सा जलना था,
जलकर खूब चमकना था,
पर ये तो जन की आखिरी उम्मीद निकला,
और मैं उम्मीदों का झोला कहीं भूल बैठा था।
जानती हूँ यूँ जलना आसान नहीं,
मुश्किलो से लड़ना आसान नहीं,
पर रख हौंसला सब से झोला खोज लेना,
कौन जाने कहीं आखिरी दीपक तुम्हीं तो नहीं।।

शिखा तिवारी